REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

ISSN : 2277-8721)

Impact factor:0.987

Bi-Monthly

VOL - III | ISSUES - II | Mar -Apr | [2014]

Chief-Editor:

Ubale Amol Baban

[Editorial/Head Office: 108, Gokuldham Society, Dr.Ambedkar chowk, Near TV Towar,Badlapur, MS ,
Contact Off : 091672640330

राश्ट्रीय विकास में आर्य समाज की भूमिका

Manju Gupta
Asstt. Prof. Sanskrit
Aggarwal College, Ballbhgarh.

१९ षताब्दी में भारत के विभिन्न भागों में पुनर्जागरण आंदलोन चल रहा था l इस काल में देश के विभिन्न प्रदेशों में बहुत सी बुराइयाँ तथा कुप्रथाएँ प्रचलित थी इन बुराइयों तथा कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों का उदय हुआ जैसे ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिषन तथा थियोसोफिकल सोसाइटी आदि l इनमें से आर्य समाज का उतरी-भारत के सामाजिक व धार्मिक जीवन में सुधार लाने की दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है l

१२ फरवरी १८२४ सन् में गुजरात राज्य के काठियावाद क्षेत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ l स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की l आर्य षब्द का अर्थ है श्रेष्ठ और प्रगतिषील l अत: आर्य समाज का अर्थ हुआ श्रेष्ठ और प्रगतिषीलों का समाज, जो वेदों के अनुकूल चलने का प्रयास करते है तथा दूसरो को उस पर चलने के लिए प्रेरित करते है l आर्य समाज केवल एक धर्मिक आन्दोलन ही नही है बल्कि यह एक सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक आन्दोलन भी हैं l समाज में प्रचलित बुराइयों को दूर करने के लिए आर्य समाज ने अनेकों क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य किए जिनका विवरण निम्न प्रकार से है :-

१- <u>धार्मिक क्षेत्र में</u> - जिस समय आर्य समाज का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उस समय हिन्दू धर्म अनेक बुराइयों और रूढियों से घिरा हुआ था l धर्म के नाम पर पुजारी अनेक

पाखण्ड फैलाकर अपना स्वार्थ सिद्व कर रहे थे । दूसरी ओर ईसाई मिशनरियाँ लोगो को ईसाई बनने के लिए उकासा रही थी । ऐसी स्थिती में आर्य समाज ने हिन्दू धर्म को सरल बनाया । आर्य समाजी शुद्व वैदिक परम्परा में विश्वास करते थे । वे मूर्तिपूजा, अवतारवाद, बलि, झूठे कर्मकाण्ड व अंधविश्वासों को स्वीकार नही करते थे । उनके अनुसार वेदों को छोड़ कर कोई अन्य धर्मग्रन्थ प्रमाण नहीं हैं मनुष्य को वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हुए यज्ञ करना चाहिए । इसके लिये किसी पुजारी की जरूरत नहीं है । ईश्वर को सृष्टि का निमिन्त कारण तथा प्रकृति को अनादि तथा शाश्वत माना । उन्होंने यह भी माना कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र हैं तथा फल भोगने में परतन्त्र हैं । इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म की कमियों को दूर करने का प्रयास किया । तथा आर्य समाज का गठन किया ।

२- समाजिक क्षेत्र में - आर्य समाज ने समाज सुधार के क्षेत्र में बढ़ -चढ कर कार्य किया । जब भारत आजाद नहीं हुआ था उस समय देष में अनेकों कुरीतियाँ व बुराइयाँ फैली हुई थी उनको खत्म करने के लिए आर्य समाज ने अनेकों आन्दोलन चलाए । उन्होंने सती प्रथा, बाल- विवाह, बहु विवाह तथा पर्दा प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों का प्रबल विरोध किया । अन्तर्जातीय विवाह तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया । आर्य समाज ने जाति पाँति, छुआछूत व उँच-नीच के भेदभाव का कडा विरोध किया । वैदिक युग में जाति जन्म पर आधारित नही थी बल्कि किसी व्यक्ति के वर्ण या जाति का निधरिण उसके गुणों और कर्मो से होता था । मनुस्मृति में कहा गया हैं -

षूद्रो ब्राहमणतामेति ब्राहमणश्चैति षूद्रताम्

क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैष्यातथैव च ।

जे षूद्रकुल में उत्पन्न होकर ब्राहमण, क्षत्रिय, और वैष्य के समान गुण, कर्म स्वभाव वाला हो तो वह षूद्र, ब्राहमण, क्षत्रिय, और वैष्य हो जाये । उसी प्रकार जो ब्राहमण, क्षत्रिय, ओर वैष्य कुल में उत्पन हुआ हो और उसके गुण, कर्म, स्वभाव षूद्र के सदृष हो तो वह षूद्र हो जाये ।

अत: जाति पाति का विरोध करके आर्य समाज ने हिन्दुओं की विभिन्न जातियों को एक दूसरे के करीब लाने का प्रयास किया । साथ ही अछूत माने जाने वालो को बराबरी का दर्जा दिलाकर सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयास किया । हरिजनों के उद्धार के लिए भी उन्होने सराहनीय प्रयास किये। गाँधी जी ने महर्षि दयानन्द के इस कार्य को उनके जीवन का सर्वश्रेष्ठ कार्य बताया । इस प्रकार उन्होने मात्र अछूतों को ही नही अपितु समस्त हिन्दू समाज को बचाया, हिन्दुत्व को बचाया और साथ ही देष को बचाया ।

३- शिक्षा के क्षेत्र में - स्वामी दयानन्द सरस्वती समाज सुधार के लिए शिक्षा के प्रसार को आवष्यक समझते थे । उनका मानना था कि सभी को नि:षुल्क और अनिवार्य शिक्षा मिलनी चाहिए । स्त्रियों और षूद्रों को भी शिक्षा पाने का पूरा अधिकार है ।

स्त्रीषूद्रौ नाधीयातमिति श्रुते :

स्त्री और षूद्र न पढ़ें इस धारणा का उन्होंने खण्डन किया । यजुर्वेद के २६वें अध्याय में भी कहा गया कि इस कल्याण अर्थात संसार और मुक्ति के सुखदेनेहारी ; वाचम् द्ध ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेष करता हूँ वैसे तुम भी किया करो ।

षतपथ ब्राहमण का वचन है कि परिवार में तीन उतम षिक्षक अर्थात माता, पिता तथा आचार्य होते है तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है -

ः मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरूशो वेद ः

अतः जिस परिवार में माता षिक्षित होगी उस परिवार का बच्चा भी षिक्षित होगा क्योंकि माता ही बच्चे की सर्वप्रथम गुरू होती है । शिक्षा की व्यवस्था गुरूकुलों में होनी चाहिए । इसके लिए लाला हंसराज ने १८८६ में लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की । उन्होंने बडी लगन व मेहनत से इस संस्था को पाला पोसा । मई १८८९ में इस महाविद्यालय को डी.ए. वी. महाविद्यालय का दर्जा दे दिया गया । इसके बाद तो आर्य समाज ने देष के अनेक भागों में डी.ए. वी. शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की ! स्त्री-शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए १८९० में जालन्धर में एक आर्यकन्या पाठषाला खोली गई । जिसकी सफलता से प्रेरित होकर १८९४ सन् में जालन्धर में ही कन्या महाविद्यालय की स्थापना की गई ।

१९०१ में स्वामी श्रद्धानन्द ने कांगडा में गुरूकुल विद्यालय की स्थापना की । इसके बाद उतर भारत में अन्य स्थानों पर ऐसे गुरूकुल स्थापित किए गए । दूसरी ओर लाला हंसराज के नेतृत्व में डी. ए. वी. संस्थाओं की स्थापना की । इन्होंने वैदिक शिक्षा के साथ-२ पाष्चात्य षिक्षा को भी अनिवार्य समझा ।

५- <u>राजनीति के क्षेत्र में</u> - स्वामी दयानन्द महान सुधारक तथा प्रखर क्रन्तिवादी महापुरूष तो थे ही, साथ ही उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी मौजूद थी । जब देष सामाजिक कुरीतियों तथा राजनीतिक दासता से जकड़ा हुआ था तब महर्षि दयानन्द ने राजनीतिक धार्मिक, तथा सांस्कृतिक उद्धार का

बीडा उठाया l इसीलिए उन्हें १८५७ की क्रान्ति का प्रथम पुरोधा कहा गया है l श भारत, भारतीयों का हैश्ए यह उनके ही उद्गार l है उन्होंने अपने प्रवचनों के माध्यम से भारतवासियों को राश्ट्रीयता का उपदेष दिया और भारतीयों को देष पर मर मिटने के लिए प्रेरित करते रहे l

सरदार पटेल ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के समबन्ध में कहा - ष्स्वामी दयानन्द जी के राश्ट्र प्रेम, उनके क्रान्तिकारी हृदय, उनकी हिम्मत, उनके ब्रह्मचर्य पूर्ण जीवन का मैं सदा उपासक रहा हूँ l६

१८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में असफल होने पर भी स्वामीजी निराष नहीं अुए अपितु उन्होने कहा कि स्वतन्त्रता संग्राम कभी असफल नहीं होता l

सत्यार्थ प्रकाष के छठे उल्लास में श राजधर्मान् व्याख्यास्याम:श कहकर स्वेदेषी राज को सर्वोपरि बताया है l उन्होने इस बात पर बल दिया है कि विदेषी राज चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो लेकिन वह स्वराज से अच्छा नहीं हो सकता l लोकमान्य तिलक ने स्वामी को श्स्वराज्य का प्रथम सन्देश वाहक कहाश् lपट्टाभि सीतारमैया ने कहा - श्गाँधीजी राश्ट्रपिता है तो दयानन्द राश्ट्रपितामहश् lइस प्रकार आर्य समाज ने अपनी विचार धारा और गतिविधियों के माध्यम से राश्ट्रीय जन जागरण में उल्लेखनीय योगदान दिया l

निश्कर्शत स्वामी ने प्याज के छिलकों की तरह बंटे हुए हिन्दू समाज को संगठित करने के लिए एकेष्वरवाद, त्रैतवाद, एवं पंचमहायज्ञों का विधान किया l गुरूकुल षिक्षा प्रणाली को जन्म देकर षिक्षा के क्षेत्र में सबको समान अधिकार दिलाकर उचँ-नीच की भावना को समाप्त किया l जिस ऋशि ने बोध प्राप्ति से लेकर जीवन के अन्त तक

अपना क्षण- क्षण संसार के उपकार में व्यतीत किया उस महान् युगद्रश्टा, युगस्रश्टा को षत-षत वन्दन- नमन ।

संदर्भ सूची

१- भारत का इतिहास - डा. आर. जे. स्वामी

२- सत्यार्थ प्रकाष

३- मनुस्मृति - १०/६५

४- सत्यार्थ प्रकाष

५- यजुर्वेद

६- षतपथ ब्राह्मण

७- भारत का इतिहास

८- भारत का इतिहास

९- सत्यार्थ प्रकाष

१०- . भारत का इतिहास